Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Article

अमरकान्त के कथा-साहित्य में बिंब और प्रतीक मध्यवर्गीय यथार्थ की सृजनात्मक अभिव्यक्ति

डॉ. शमशाद अली *

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, जी. एफ. कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author: *डॉ. शमशाद अली

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18552091

Abstract

प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंदी कथा-साहित्य के प्रमुख यथार्थवादी कथाकार अमरकान्त के कथा-साहित्य में प्रयुक्त बिंबों और प्रतीकों का विश्लेषण किया गया है। अमरकान्त ने मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, संघर्षों, विवशताओं और मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत सहज, सशक्त और प्रभावशाली ढंग से अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। उनके कथा-शिल्प में बिंब और प्रतीक केवल सौंदर्यात्मक उपकरण न होकर सामाजिक यथार्थ को गहराई से उजागर करने वाले माध्यम बन जाते हैं। इस अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार अमरकान्त साधारण जीवन स्थितियों, पात्रों, पशु-पक्षियों, प्रकृति और दैनिक क्रिया-कलापों के माध्यम से ऐसे बिंब और प्रतीक रचते हैं, जो पाठक के मन में स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। उनके कथा-साहित्य में बिंब और प्रतीक मध्यवर्गीय यथार्थ, सामाजिक विडंबनाओं तथा मानवीय मूल्यों की सजीव अभिव्यक्ति बनकर उभरते हैं। यह शोध-पत्र अमरकान्त की रचनात्मक विशिष्टता को समझने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 27-11-2025
- **Accepted:** 28-12-2025
- **Published:** 30-01-2026
- **IJCRM:**4(1); 2026: 243-246
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. शमशाद अली. अमरकान्त के कथा-साहित्य में बिंब और प्रतीक मध्यवर्गीय यथार्थ की सृजनात्मक अभिव्यक्ति।. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(1):243-246.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: अमरकान्त, हिंदी कथा-साहित्य, बिंब, प्रतीक, नई कहानी, यथार्थवाद, मध्यवर्गीय जीवन

© 2026 डॉ. शमशाद अली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

हिन्दी कथा-साहित्य के यथार्थवादी परम्परा के सशक्त हस्ताक्षर अमरकान्त ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने सामान्य जन-जीवन की साधारण प्रतीत होने वाली परिस्थितियों में छिपे गहरे सामाजिक, आर्थिक और मानवीय संघर्षों को अत्यन्त सहज, संवेदनशील और विश्वसनीय शिल्प के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। नई कहानी आन्दोलन के समकालीन होते हुए भी अमरकान्त की रचनात्मक दृष्टि किसी एक साहित्यिक प्रवृत्ति तक सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक यथार्थ, मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष और मानवीय मूल्यों के सूक्ष्म अन्वेषण से जुड़ी रही है। उनकी कथाकृतियाँ जीवन के हाशिये पर खड़े मनुष्यों की पीड़ा, विवशता और आशा को बिना किसी आडम्बर के, सजीव बिम्बों और अर्थगर्भित प्रतीकों के सहारे पाठक के सामने प्रस्तुत करती हैं। मधुरेश का कथन है कि ''एक तरह से वे नई कहानी आन्दोलन के बीच ही विकसित हुए लेखक हैं, लेकिन उसमें ठीक से खप न पाने के कारण ही वे एक लम्बे समय तक उपेक्षा के शिकार होकर हाशिए के लेखक बने रहे- एक ऐसे लेखक जिन्हें तब नामवर सिंह ने भी अपने स्तंभ 'हाशिए पर' में शामिल करना जरूरी नहीं समझा। लेकिन एक तरह से अमरकान्त का इस तरह समय से पीछे छूट जाना ही उनका समय से आगे बढ जाना था।''[1]

अमरकान्त के कथा साहित्य का शिल्प अत्यन्त ही सहज है। बदलते जीवन मूल्यों की वास्तविकता का सत्यान्वेषण कर अपनी रचनाओं में उसे बडी ही कुशलता से व्यक्त करते हैं। अमरकान्त शिल्प और चित्रण कौशल दोनों में सिद्धहस्त थे। अपने इन्हीं गुणों की वजह से अपने समकालीन लेखकों में उनकी अलग पहचाने जाते हैं।

अमरकान्त अपनी रचनाओं में परवेश एवं कथानक के अनुसार विशेष शैली का प्रयोग करते हैं जैसे-'सूखा पत्ता' उपन्यास में उन्होंने पूर्वदीप्ति शैली, जो कि अतीत की स्मृतियों पर आधारित होती है, का प्रयोग किया है। उपन्यास की प्रथम पंक्ति में वह लिखते हैं ''जब कभी अपने लड़कपन और स्कूली दिनों की बात सोचता हूँ तो सबसे पहले अपने चार दोस्तों और मनमोहन की याद आती है।''[2] प्रिय मेहमान', 'सपूत', 'छिपकली', 'पलाश के फूल', 'पेड़-पौधे', 'एक नौजवान की मौत', 'लड़की की शादी', 'मुलाकात' आदि इसी शैली में लिखी गई कहानियाँ हैं। उनके द्वारा 'सुन्नर पांडे की पतोह', 'आकाश पक्षी', 'काले उजले दिन' आत्मकथात्मक शैली और 'ग्राम सेविका', 'सुखजीवी' वर्णनात्मक शैली में लिखा गए उपन्यास हैं।

अमरकान्त की अधिकतर कहानियाँ आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई हैं। इन कहानियों में 'गले की जंजीर', 'पोखरा', 'सवा रुपये', 'अमेरिका की यात्रा', 'लाखो', 'लोक-परलोक', 'महान चेहरा', 'बहादुर', 'जिन्दगी और जोंक', 'घुड़सवार', 'मकान', आदि हैं।

बिंब और प्रतीकों का प्रयोग अमरकांत की विशष पहचान है। कहानीकार कहानी में सजीवता लाने के लिए अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति से पाठक के मन-मस्तिष्क पर जो चित्र मूर्त करते हैं उसे बिम्ब कहा जा सकता है। 'बिम्ब' अंग्रेजी भाषा के 'इमेज' शब्द से बना है जिसका अर्थ पदार्थ को मूर्त रूप प्रदान करना है। वस्तुतः किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान की अनुकृति ही बिम्ब है।

अमरकान्त की कहानियों का बिम्ब अपने समकालीन कथाकारों से विशिष्ट है। उनके पात्रों की वेशभूषा, बनावट, व्यवहार, क्रिया-कलाप हू-ब-हू मध्यवर्गीय परिवारों से मेल खाते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने पशु-पक्षियों से पात्रों के जीवन की उपमा दे कर बिम्ब विधान को और भी सशक्त बनाने का प्रयास किया है। पद्धति, मनोभाव एवं वातावरण जैसी अमूर्त अनुभूति भी बिम्ब से साकार लगने लगती हैं। उनकी अधिकतर कहानियों में बिम्ब किसी न किसी रूप में अवश्य उपस्थित हुआ है।

'गले की जंजीर' कहानी के नायक का यह कथन उसकी मनःस्थिति को मूर्त कर देता है- 'मैं उसे वनमानुष की तरह देखने लगा।'[3] 'सन्त तुलसीदास और सोलहवाँ साल' कहानी में सन्त तुलसीदास का बिम्ब इस प्रकार है-'उनके कद्दावर शरीर का चिपका डबलंग चेहरा शीशम के तने की छाल की भाँति सुख-पकठा चला है। पोशाक उस मदारी की तरह, जिसने एक-दो बार, छोटे-मोटे शहरों में जादू का कमाल दिखाने के पश्चात् अपने को 'प्रोफेसर' घोषित कर दिया हो। दो फेरे की उटुंग धोती, काफी लम्बा कुर्ता, उस पर एक जाकेट, उसके ऊपर एक कोट, पैरों में बिना मोजे के फ्लैक्स जूते तथा हाथ में एक लाल सोंटा।[4] उनकी पत्नी शकुन्तला का बिम्ब भी देखने लायक है-''तीखा गोरा चेहरा, आम के फाँक जैसी आँखें तथा कतरे पान जैसे होठ। लम्बे, पतले तथा मक्खन की तरह चिकने गले पर बाईं ओर एक काला तिल।''[5]

'सवा रुपये' कहानी में नायक अपने बाबा का बिम्ब इस प्रकार व्यक्त करता है ''हमारे बाबा काफी मोटे थे। मुँह पर बड़े-बड़े गलमुच्छे थे, जो कानों से लिपटे रहते। उन्हें देखकर पुराने जमाने के मेवाड़ के राजपूतों की याद आ जाती थी। मूछों में वे बाकायदा तेल लगाते, और उन्हें रोज कंघे से देर तक झाड़ते।''[6]

'दोपहर का भोजन' कहानी में मध्यवर्गीय परिवारों के यथार्थ का बिम्ब उपस्थित करते हुए अमरकान्त लिखते हैं ''दो रोटियाँ, कटोरा-भर दाल, चने की तली तरकारी। मुंशी चन्द्रिका प्रसाद पीठे पर पालथी मार कर बैठे रोटी के एक-एक ग्रास को इस तरह चुभला-चबा रहे थे, जैसे बूढ़ी गाय जुगाली करती है। उनकी उम्र पैंतालीस वर्ष के लगभग थी, किन्तु पचास-पचपन के लगते थे। शरीर पर चमड़ा झूलने लगा था, गंजी खोपड़ी आइने की भाँति चमक रही थी। गन्दी धोती के ऊपर अपेक्षाकृत कुछ साफ बनियान तार-तार लटक रही थी।''[7]

'जिन्दगी और जोंक' कहानी में मजदूरी कर पेट भरने वाले रजुआ का बिंब देखिए ''उसने कोई छोटा काम किया तो उसे बासी रोटी या भात या भुना चना या सत्तू दे दिया जाता और वह एक कोने में बैठ कर चापुड़-चापुड़ खा-फाँक लेता। अगर कोई बड़ा काम कर देता तो एक जून का खाना मिल जाता, पर उसमें अनिवार्य रूप से एकाध चीज बासी रहती और कभी-कभी तरकारी या दाल नदारद होती। कभी भात-नमक मिल जाता, जिसे वह पानी के साथ खा जाता, कभी-कभी रोटी-अचार और कभी-कभी तो सिर्फ तरकारी ही खाने या दाल पीने को मिलती। कभी खाना न होने पर दो-चार पैसे मिल जाते या मोटा, पुराना कच्चा चावल या दाल या चार-छह आलू।''[8] इस कहानी में कथावाचक का कथन भी बिम्ब रूप में प्रकट होता है-''कोई छुट्टी का दिन था। मैं बाहर बैठा एक किताब पढ़ रहा था कि इतने में रजुआ भीतर आया और कोने में बैठकर कुछ खाने लगा। मैंने घूम कर एक निगाह उस पर डाली। उसके हाथ में एक रोटी और थोड़ा-सा अचार था और वह सूअर की भाँति चापुड़-चापुड़ खा रहा था। बीच-बीच में वह मुस्करा पड़ता, जैसे कोई बड़ी मंजिल सर करके बैठा हो।''[9] रजुआ के शरीर का यह सजीव किंतु दयनीय बिम्ब मन को झकझोर देता है जो इस प्रकार है-''उसका शरीर कै-दस्त से लथपथ था। उसकी छाती की हड्डियाँ और उभर आयी थीं। पेट तथा आँखें पिचक

© 2026 डॉ. शमशाद अली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कर धँस गयी थीं और गालों में गड्ढे बन गये थे। उसकी आँखों के नीचे भी गहरे काले गड्ढे दिखाई दे रहे थे और उसका मुँह कुछ खुला हुआ था। पहले देखने से ऐसा मालूम होता था कि वह मर गया है. लेकिन उसकी साँस धीमे-धीमे चल रही थी।''[10]

'डिप्टी कलक्टरी' कहानी में बेटे नारायण की नौकरी को लेकर आशान्वित शकलदीप बाबू का नकारात्मक परिणाम आने के बाद की परिस्थिति का चित्रण कौशल अमरकांत के ही बूते की है। वे लिखते है-''वह धीरे-से चोर की भाँति पैरों को दबा कर कमरे के अन्दर दाखिल हुए। उनके चेहरे पर अस्वाभाविक विश्वास की मुस्कराहट थिरक रही थी। वह मेज के पास पहुँच कर चुपचाप खड़े हो गये और अंधेरे ही में किताब उलटने-पुलटने लगे। लगभग डेढ़-दो मिनट तक वहीं उसी तरह खड़े रहने पर वह सराहनीय फुर्ती से घूमकर नीचे बैठ गये और खिसककर चारपाई के पास चले गये और चारपाई के नीचे झाँक झाँक कर देखने लगे, जैसे कोई चीज खोज रहे हों। तत्पश्चात पास में रखी नारायण की चप्पल को उठा लिया और एक-दो क्षण उसको उलटने-पुलटने के पश्चात् उसको धीरे से वहीं रख दिया। अन्त में वह साँस रोककर धीरे-धीरे इस तरह उठने लगे, जैसे कोई चीज खोजने आये थे, लेकिन उसमें असफल होकर चुपचाप वापस लौट रहे हों। खड़े होते समय वह अपना सिर नारायण के मुख के निकट ले गये और उन्होंने नारायण को आँखें फाड़-फाड़ कर गौर से देखा। उसकी आँखें बन्द थीं और वह चुपचाप पड़ा हुआ था, लेकिन किसी प्रकार की आहट या किसी प्रकार का शब्द नहीं सुनाई दे रहा था। शकलदीप बाबू एकदम डर गये और उन्होंने काँपते हृदय से अपना बायाँ कान नारायण के मुख के बिल्कुल नजदीक कर दिया। और उस समय उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, जब उन्होंने अपने लड़के की साँस को नियमित रूप से चलते पाया।''[11]

'पैक्टिस' कहानी में अमरकान्त बिहारीलाल का बिम्ब अमरकांत कुछ इस तरह प्रस्तुत करते हैं ''उनके चेहरे पर झुर्रियाँ और लकीरें उभर आयी थीं, गोया काली मिट्टी सूखने पर चिटक गयी हो। उनके गालों में कटोरियाँ बन गयी थीं। वस्तुतः वे अपनी ऐसी उम्र पर पहुँच गये थे जब वे बार-बार थूक कर विचित्र ढंग से मुँह सिकोड लेते, जिससे उनकी ठुड्डी और नाक मिल जाती और उनकी बिच्छूनुमा मूँछे ऊपर तन जातीं।''[12]

'एक बाढ़ कथा' कहानी में वर्षा ऋतु में बढ़ती समस्याओं की ओर इंगित करता बिम्ब इस प्रकार है-''करीब एक महीने से रोज पानी गिर रहा था। बीच-बीच में दस-पंद्रह मिनट के लिए पानी रुकता, फिर न मालूम कहाँ से काले-काले बादल छा जाते और आसमान बुरी तरह चूने लगता। नदी चढ़ती उमंग में मतवाली चाल से चलने लगी। नाले उल्टी दिशा में चलने लगे। निचले इलाकों की सड़कों पर पानी जमा होकर मोहल्लों के अन्दर घुसने लगा।''[13]

अमरकांत ने अपनी कहानियों में प्रतीकों का ख़ूब प्रयोग किया है। वास्तव में एक निश्चित संकेत जो विशेष अर्थ को इंगित करे उसे प्रतीक कहते हैं। कल्पना के सहारे जिस बिम्ब का निर्माण होता है उसको मूर्तिमान करने के लिए व्यंजित संकेत प्रतीक का ही रूप है। बिम्ब और प्रतीक का अन्तर स्पष्ट करते हुए निर्मल सिंहल लिखते हैं कि ''कल्पना के मूर्त होने पर बिंब का सृजन होता है और बिंब के बार-बार प्रयोग से वह एक निश्चित अर्थग्रहण कर प्रतीक बन जाता है। बिंब सृजनात्मक है और प्रतीक विचारात्मक। प्रतीक रेखाओं को ही रूपायित करता है जबकि बिंब रंग को भी रूपायित करता है।''[14]

अमरकान्त ने अपनी कहानियों में प्रतीक का अनोखा प्रयोग किया है। रचना को मार्मिक और प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उन्होंने स्थान, काल विशेष के राज्य व्यक्ति विशेष, वृक्ष, पशु-पक्षियों आदि को भी प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है। 'केले, पैसे और मूँगफली' कहानी में प्रतीक का दृश्य-''सुमंगला ने मुस्कराते हुए स्नेह से एक क्षण अपने पति की आँखों में देखा, और फिर एक मूँगफली को जोकर की भाँति मुँह करके दाँत से फोड कर बोली, 'हाँ जी, ये दस रुपये की नहीं मेरे लिए तो दस हजार रुपये की हैं।''[15]

'जिन्दगी और जोंक' कहानी का शीर्षक ही प्रतीकात्मक है। रजुआ का का चित्र खींचते हुए वे लिखते हैं-''उसकी खोपड़ी किसी हलवाई की दुकान पर दिन में लटकते काले गैस-लैम्प की भाँति हिल-डुल रही थी। हाथ-पैर पतले पेट अब भी हँडिया की तरह फूला हुआ और शरीर निहायत गन्दा एवं घृणित।''[16] इसी कहानी में प्रतीक का दूसरा उदाहरण इस तरह है ''नीम के पेड के नीचे एक दुबला-पतला काला आदमी, गन्दी लुंगी में लिपटा चित्त पड़ा था, जैसे रात में आसमान से टपक कर बेहोश हो गया हो अथवा दक्षिण भारत का कोई भूला-भटका साधु निश्चित स्थान पाकर चुपचाप नाक से हवा खींच खींच कर प्राणायाम कर रहा हो।''[17]

'दो चरित्र' कहानी में जाड़े में सुबह का दृश्य प्रतीक रूप में इस तरह अंकित किया गया है-''मकानों के सामने सड़क और सहन में धूप का एक पतला, सुनहरा खंड किसी नव-प्रसूता माँ के स्नेहाँचल जैसा फैल गया था। लोग अपने घरों से बाहर निकलकर ठिठुरते-काँपते घाम खा रहे थे।''[18]

'हत्यारे' कहानी में गोरे-काले की बातों में बहुत मारक प्रतीक अभिव्यंजित हुआ है-''तुम साले गदहे हो! जब मैं प्रधानमंत्री बनूँगा तो तुमको सेक्रेटेरियट का भंगी बनाऊँगा!''[19] इसी कहानी में प्रतीक का दूसरा उदाहरण ''दोनों युवक अरबी घोड़ों की तरह दौड़ रहे थे..... पीछा करने वालों में से एक फुर्तीबाज व्यक्ति तीर की तरह उनकी ओर बढ़ा आ रहा था। वह समीप आता गया... फिर फुर्ती से आगे बढ़कर उसने छुरा उस व्यक्ति के पेट में भोंक दिया, जो 'हाय मार डाला' कहके लड़खड़ा कर गिर पड़ा।''[20]

'छिपकली' कहानी में मालिक छिपकली का तो रामजी लाल कीड़े का प्रतीक है। मालिक की फटकार सुनने के बाद रामजी लाल की मनःस्थिति का उदाहरण प्रतीक रूप में ''इसी समय उसका ध्यान एक छिपकली की तरफ गया, जो दीवार पर चुपचाप चिपकी थी और उसके सामने कुछ दूरी पर एक काला कीडा फड़-फड़ कर रहा था। रामजी लाल ने सोचा कि यह छिपकली छोटी और दुमकती थी, लेकिन अब उसकी दुम भी जम आयी है और वह मोटी भी हो गयी है। इस खयाल से उसको बड़ा अचम्भा हुआ और उसके सूखे होठों पर एक मुस्कराहट दौड़ गयी। सहसा छिपकली कीड़े की ओर दौड़ी, परन्तु इसी समय कीड़ा उड़कर नीचे फर्श पर पट् से गिर गया। रामजी लाल ने जल्दी से सिर झुका लिया।''[21]

'जोकर' कहानी में नलिन और ढलते सूरज का दृश्य प्रतीक रूप में इस प्रकार है-''धूप सामने शीशम के शिखर पर किसी चिड़िया की तरह पहुँचकर चमक रहीं थी। वे पायजामा, कमीज और सर्ज की एक काली-सी कोट में अकड़े पान से उलझे मुँह को बकरी की तरह तेजी से चला रहे थे। किन्तु सबसे विचित्र था उनका सिर, जो एक छोटी गेंद की तरह उनकी धड़ से चिपका, मामूली बात पर भी आगे-आगे हिलने लगता था। नलिन भाई बड़े होकर विचित्र हो गये थे, गोया कोई पालतू

© 2026 डॉ. शमशाद अली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जानवर कुर्ता और पायजामा तथा चश्मा पहनकर दो पैरों पर चलने लगा हो।''[22]

'मौत का नगर' कहानी यह प्रतीक भी विशिष्ट है-''उनके होंठ विष भरी मुस्कराहट से फैल गये थे। उनके शरीर ताजिए की तरह हिल रहे थे।''[23] इसी कहानी में प्रतीक का दूसरा उदाहरण-''वह पत्ते की तरह उधियाता टेढ़ा-तिरछा चल रहा था.....वह कुछ देर पहले इसको हत्यारा समझता था. पर यह मेमने की तरह प्यारा है। मजीद का रिश्तेदार भी ऐसा ही था...''[24]

'देश के लोग' कहानी में प्रतीक का दृश्य कुछ यों है-''उसके शरीर का मांस गल गया था और उसकी उँगलियाँ सूखी भिंडी की तरह दिखाई दे रही थीं। उसकी असाधारण रूप से फैली आँखों की ज्योति में उस लालटेन की टिमटिमाहट थी, जो बुझने वाली होती है।''[25]

अमरकान्त की अधिकतर कहानियों के शीर्षक भी प्रतीकात्मक रूप में हैं जैसे 'मछुआ', 'चाँद', 'हत्यारे', 'छिपकली' इत्यादि।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अमरकान्त का कथा-शिल्प अपनी सहजता, सजीव बिम्बात्मकता और अर्थगर्भित प्रतीकात्मकता के कारण हिन्दी कहानी परम्परा में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उन्होंने साधारण मध्यवर्गीय जीवन, श्रमशील और हाशिये पर खड़े मनुष्य की पीड़ा, विवशता तथा आन्तरिक संघर्षों को किसी वैचारिक आग्रह या कलात्मक आडम्बर के बिना अत्यन्त संवेदनशील ढंग से रूपायित किया है। बिम्ब और प्रतीक उनके यहाँ मात्र सौन्दर्य-तत्त्व न होकर सामाजिक यथार्थ को अधिक तीक्ष्ण, मार्मिक और प्रभावपूर्ण बनाने के सशक्त उपकरण बन जाते हैं। इस दृष्टि से अमरकान्त का कथा-साहित्य न केवल अपने समय के यथार्थ का सच्चा दस्तावेज है, बल्कि मानवीय संवेदना और रचनात्मक शिल्प की स्थायी उपलब्धि के रूप में हिन्दी कथा-साहित्य को समृद्ध करता है।

संदर्भ-सूची

1. मधुरेश. हिंदी कहानी का विकास. इलाहाबाद: सुमित प्रकाशन; 2004. पृ. 156।
2. अमरकांत. सूखा पत्ता. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2015. पृ. 9।
3. अमरकांत. गले की जंजीर. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 27।
4. अमरकांत. संत तुलसीदास और सोलहवां साल. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 30।
5. अमरकांत. संत तुलसीदास और सोलहवां साल. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 31।
6. अमरकांत. सवा रुपये. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 38।
7. अमरकांत. दोपहर का भोजन. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 66।
8. अमरकांत. जिंदगी और जोंक. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 73।
9. अमरकांत. जिंदगी और जोंक. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 74।
10. अमरकांत. जिंदगी और जोंक. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 82।
11. अमरकांत. डिप्टी कलक्टरी. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 107–108।
12. अमरकांत. पैक्टिस. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 411।
13. अमरकांत. एक बाढ़ कथा. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 2. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 85।
14. सिंहल निर्मल. नई कहानी और अमरकांत. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 1999. पृ. 78।
15. अमरकांत. केले और मूँगफली. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 61।
16. अमरकांत. जिंदगी और जोंक. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 74।
17. अमरकांत. जिंदगी और जोंक. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 69।
18. अमरकांत. दो चरित्र. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 109।
19. अमरकांत. हत्यारे. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 206।
20. अमरकांत. हत्यारे. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 212।
21. अमरकांत. छिपकली. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 231।
22. अमरकांत. जोकर. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 277–278।
23. अमरकांत. मौत का नगर. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 378।
24. अमरकांत. मौत का नगर. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 382।
25. अमरकांत. देश के लोग. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ. भाग 1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009. पृ. 235–236।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the author

डॉ. शमशाद अली जी. एफ. कॉलेज, शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) में हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। उनकी शोध-रुचि हिंदी कथा-साहित्य, यथार्थवाद तथा समकालीन आलोचना में है। वे अध्यापन के साथ-साथ शोध एवं लेखन में सक्रिय हैं।

© 2026 डॉ. शमशाद अली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/